गुलज़ार

बाबा और बाबा की छड़ी

साथ-साथ चलते हैं दोनों
बाबा और बाबा की छड़ी!

पहले वो कहता है चल...चल बाहर चलते हैं
और उठा लेता है छड़ी को
बिस्तर पर जो लेटी हुई थी!
फिर वो उसका हाथ पकड़ के बाहर लाती है,
साथ-साथ चलते हैं दोनों
बाबा और बाबा की छड़ी!

छड़ी भगा देती है कोई गली का कुत्ता भौंके तो
बाग तलक जाते हैं दोनों
थक जाए तो बाबा अक्सर, छड़ी पे माथा टेक के
बेंच पे बैठ भी जाता है
छड़ी ही उठकर कभी-कभी बाबा को दिखाती है
नया-नया जो बौर आया है नए-नए पेड़ों पर

एक कदम जब वो चलती है
एक कदम वो चलता है
बाबा और बाबा की छड़ी!

दोनों में से कोई अकेला चल नहीं सकता
हाथ अगर छूटे तो दोनों गिर पड़ते हैं
इक जवां, इक बूढ़ा है
बाबा और बाबा की छड़ी!!

चित्रः सोनाली विश्वास